दिनांक :- 25-07-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक़ आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम वर्ष (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास (अनुशांगिक)

इकाई :- पाँच

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- वैदिक सभ्यता

आर्थिक जीवन में परिवर्तन (changes in Economic condition)

इस समय आर्यों के आर्थिक जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। इसका कारण था कि उन्हें लौह का ज्ञान प्राप्त हो चुका था। इससे कृषि में मदद मिली। उपज बढ़ी और कृषि आर्यों का मुख्य पेशा हो गया।

कृषि उत्तरवैदिककालीन आर्यों की जीविका का मुख्य साधन

Scanned with CamScanner

कृषि या खेती हल बैल की सहायता से होती थी। इस युग में हल का आकार और उपादेयता काफी बढ़ गई थी। कुछ इतने बड़े होते थे कि उन्हें छः, आठ बारह और यहाँ तक कि चौबीस बैलों से खींचा जाता था। आर्यों के खेती के तरीके, फसल और बीज की जानकारी थी। उपज बढ़ाने के लिए खाद का उपयोग किया जाता था। सिंचाई का काम वर्षा और कुएँ के जल के साथ साथ नहरों से होता था। वर्ष में दो फसलें होती थी जो शीतकाल और ग्रीष्मकाल में काटी जाती थी। गेहूँ, जौ, धान, उड़द, मूँग मसूर और तिल की खेती होती थी। गंगा यमुना की उपजाऊ मिट्टी खेती के लिए अद्वितीय थी और इसलिए आर्यों के एक बड़े समुदाय ने कृषि को पेशे के रूप में वहाँ अपना लिया। कृषि में वृद्धि के कारण आर्य थोड़े ही दिनों में समृद्ध एवं सम्पन्न हो गये।

Scanned with CamScanner

पशुपालन :- कृषि के अलावा पशुपालन भी एक महत्वपूर्ण व्यवसाय था। साधारण मनुष्य ही नही बल्कि राजा भी पशुधन की कामना करते थे। इस युग में गाय प्रमुख पशु थी। अधिक से अधिक संख्या में गायें रखना वैभव एवं ऐश्वर्य का प्रतीक था। गौओं का दानपवित्र समझा जाता था। शतपथ ब्राह्मण में गाय का वध और मांसाहार वर्जनीय बतलाये गये है। गाय बैल के अतिरिक्त भैंस, भेड़, बकरी, घोड़ा, हाथी, गदहा तथा शूकर भी उपयोगी पशु थे।

शिल्प :- उत्तर वैदिक काल में अनेक शिल्पों और व्यवसायों का विकास हुआ सूत, व्याध, जलोपजीवी, गोप, कर्षक, रथकार, सुवर्णकार, रंजक रज्जुकार रंगसाज रसोइया लोहार नर्तक गायक कालबाज महावत चर्मकार आदि शिल्पो और व्यवसायो का उल्लेख मिलता है। ज्योतिषी, वैद्य और नाई का व्यवसाय भी इस समय विकसित था।

Scanned with CamScanner

लेकिन समाज में उन्हें सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता था
नदी और बाँसुरी बजाने वाले का उल्लेख शतपथ ब्राह्मण में
मिलता है और नाव बनाने वालों का उल्लेख भी मिलता है।
उत्तर वैदिककाल में ऊनी वस्त्रों का निर्माण होता था। सन
से बीरे, चटाई, वस्त्र और आच्छादन बनाये जाते थे।
कताई, बुनाई और कढ़ाई का काम स्त्रियाँ करती थीं। रंग
साजी और रोकरी बुनने का काम भी स्त्रियाँ करती थीं। कु
लाल का व्यवसाय बड़ा महत्वपूर्ण था। उसका काम मिट्टी
के घड़े, प्याले तथा तश्तरियाँ बनाना था। पुरातत्विक प्रमाण
भी स्पष्ट करते हैं कि इस समय चित्रित धूसर भाण्ड
और भी तैयार किये जाते थे। चर्मकार और बढ़ई के
शिल्पों की खूब उन्नति हुई थी। तैत्तरीय ब्राह्मण
में मिषक का उल्लेख मिलता है पर इसका व्यवसाय
अधिक सम्मानीय नहीं था।

Scanned with CamScanner

धातु का काम :- उत्तर वैदिक काल मे आर्यो को अनेक धातुओ का ज्ञान हुआ था। ऋग्वेद मे केवल सोना और अयस का उल्लेख हुआ है लेकिन उत्तर वैदिककालीन आर्यो को सोना और अयस के अतिरिक्त टिन, ताँबा, चाँदी शीशा लोहा आदि धातुओ का ज्ञान हो था। धातु ओ से औजार हथियार, आभूषण और सिक्के बनाये जाते थे। सोना नदियो की तलहटी से भूमि के भीतर से या कच्ची मटयाली धातु को गला कर निकाला जाता था। सोना और चाँदी के आभूषण बनाये जाते थे। इस समय शतमान नामक सिक्के का प्रचलन था। इसकी तौल सौ कृष्णल या गुँजा के दाने के बराबर था। दान में गाय के साथ सिक्का भी दिया जाता था।

इस प्रकार उत्तर वैदिक काल में आर्यो के भौतिक जीवन में बड़ी उन्नति हुई थी। पशुचारी और अर्द्ध घुमन्तु जीवन का अन्त हो गया था। जीवन अब स्थायी और स्थिर हो गया था।

विविध कलाओं और शिल्पों का विकास हुआ था। आर्य अब स्थायी रूप से उत्तरी गंगा के मैदान में बस गये थे। यहाँ की भूमि उपजाऊ थी। इसलिए किसान अब अपनी जीविका के लिए पर्याप्त अनाज उत्पन्न कर लेते थे। राजाओं और पुरोहितों की जीविका के लिए भी वे कुछ बचा लेते थे।

धर्म और दर्शन (Religion and Philosophy)

कर्मकाण्ड की प्रधानता :- उत्तर वैदिक युग में भी पूर्व वैदिक काल के धार्मिक विश्वास कायम रहे। इस युग में भी ऋग्वेद के देवताओं की पूजा होती थी लेकिन धर्म स्वरूप में बहुत पूर्ण परिवर्तन हुआ। पूर्व वैदिक काल के धार्मिक जीवन की सरलता जाती रही। कर्मकाण्ड की जटिलता बढ़ती गई। धर्म का स्वरूप यांत्रिक हो गया था। धार्मिक आडम्बर बढ़ते जा रहे थे। धर्म में वेदवाद कर्मकाण्ड और आडम्बर को प्रधानता दी जाने लगी। यज्ञ अब लम्बा, पेचीदा और

खर्चीला हो गया था। लोग यज्ञ और बलि पर विशेष ध्यान देते थे अश्वमेध राजसूय और वाजपेय जैसे खर्चीले और विशाल यज्ञों का विकास इसी युग में हुआ था। यज्ञ में पशु की बलि दी जाती थी। यज्ञिक कर्मकाण्ड के सम्बंध में अनेक नियम बने। यज्ञशालाओं और हवनकुण्डों का निर्माण हुआ। धार्मिक विधि-विधान के बढ़ने से समाज के पुरोहितों की महत्ता बढ़ी। कोई-कोई यज्ञ तो महीनों या वर्षों चलता था। एक पुरोहित यज्ञ नहीं करा सकता था। अब यज्ञ कराने के लिए चार पुरोहित की आवश्यकता होती थी। उत्तर वैदिक काल में पूजा-पद्धति में काफी परिवर्तन हो गया था। देवताओं को प्रसन्न करने के लिए स्तुति पाठ का अब उतना महत्व नहीं था। अब यज्ञों को अधिक महत्व दिया जाता था। यज्ञों का आयोजन सामूहिक रूप से तथा घरों में होता था। सामूहिक यज्ञों में राजा और उस जनसमुदाय के सभी लोग भाग लेते थे।